

**15P/273/30**

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

Roll No. (Write the digits in words) .....

Serial No. of OMR Answer Sheet .....

Day and Date ..... (Signature of Invigilator)

### INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only **blue/black ball-point pen** in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 10 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall *except the Admit Card without its envelope*.
3. *A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.*
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space provided above.
5. *On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Question Booklet Number and the Set Number in appropriate places.*
6. *No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Question Booklet.*
7. *Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfair means.*
8. *Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.*
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only **OMR Answer Sheet** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

**Total No. of Printed Pages : 24**

[उपर्युक्त निर्देश हिन्दी में अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए हैं।]

**15P/267/30**

**ROUGH WORK**  
रफ़ कार्य

**15P/273/30**

**No. of Questions : 150**

**प्रश्नों की संख्या : 150**

**Time : 2 Hours**

**Full Marks : 450**

**समय : 2 घण्टे**

**पूर्णाङ्क : 450**

**Note :** (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. **One mark will be deducted for each incorrect answer. Zero** mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3 (तीन)** अंकों का है। **प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा।** प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक **शून्य** होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

**01.** शब्दोपात्तं देवताविज्ञानं वेदाः इति लक्षणमस्ति।

- |                      |                      |
|----------------------|----------------------|
| (1) जैमिने:          | (2) सायणस्य          |
| (3) पं० ओझा महोदयस्य | (4) स्वामिदयानन्दस्य |

**02.** ऋच्यधिरुद्धं भवति

- |         |          |         |           |
|---------|----------|---------|-----------|
| (1) ऋक् | (2) यजुः | (3) साम | (4) अथर्व |
|---------|----------|---------|-----------|

**03.** दुदोहयज्ञसिध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम् इति वचनमस्ति।

- |                |                        |                  |                 |
|----------------|------------------------|------------------|-----------------|
| (1) मनुस्मृतेः | (2) याज्ञवल्क्यस्मृतेः | (3) पराशरस्मृतेः | (4) नारदस्मृतेः |
|----------------|------------------------|------------------|-----------------|

15P/273/30

04. नित्यात्मको वेदोऽस्ति

- (1) शब्दमयः (2) तत्त्वमयः (3) यज्ञमयः (4) कर्ममयः

05. वेदानांवेदता अस्ति।

- (1) लौकिकार्थ प्रतिपादने (2) दिव्यार्थप्रतिपादने  
(3) भौतिकार्थ प्रतिपादने (4) कर्मप्रतिपादने

06. सहस्रशास्त्रम्विद्यते-

- (1) ऋक् (2) यजुः (3) साम (4) अथर्वः

07. सूर्याद् भवन्ति

- (1) ऋचः (2) यजूषि (3) सामानि (4) अथर्वणः

08. अथ यदेतदस्मिन्नर्चिदीप्यते तन्महाव्रतं तानि

- (1) ऋचः (2) यजूषि (3) सामानि (4) अथर्वणः

09. आदित्यो भवति देवता

- (1) ऋचाम् (2) यजुषः (3) सानः (4) अथर्वणः

10. ऋक् प्रपद्ये

- (1) वाचम् (शरीरम्) (2) मनः (3) प्राणम् (4) इन्द्रियम्

11. यजुः प्रपद्ये ( भवति )

- (1) वाचम् (2) मनः (3) प्राणम् (4) इन्द्रियम्

12. साम प्रयद्ये ( भवति )  
 (1) वाचम् (2) मनः (3) प्राणम् (4) इन्द्रियम्
13. तृचं साम उच्चते इति लक्षणमस्ति  
 (1) ऋचः (2) यजुषः (3) साम्मः (4) अथर्वणः
14. वेदेषूपदिष्टं कर्म व्याख्या वर्तते  
 (1) सिद्धान्तविशेषस्य (2) लोकविशेषस्य (3) फलविशेषस्य (4) शास्त्रविशेषस्य
15. साम्मा क्रियते  
 (1) शस्त्रम् (2) स्तोत्रम् (3) प्रहकर्म (4) ब्रह्मकर्म
16. सामवेदस्य ऋत्विक् भवति  
 (1) होता (2) अध्वर्युः (3) उद्गाता (4) ब्रह्मा
17. ऋग्यजुःसामभिः संस्क्रियते  
 (1) वाचम् (2) मनः (3) प्राणः (4) आत्मा
18. औदुम्बरशाखाया अधः उपविशति  
 (1) होतृगणः (2) उद्गातृगणः (3) अध्वर्युगणः (4) ब्रह्मगणः
19. विष्टुतिभिः प्रदर्शयते-  
 (1) छन्दः (2) स्तोम (3) साम (4) उक्थ्यम्

20. सामवेदस्यांपलब्धशाखाः सन्ति

- (1) सहस्रम् (2) तिस्रः (3) पञ्च (4) दश

21. उद्गातृगणे सदस्याः भवन्ति

- (1) पञ्च (2) षोडश (3) चत्वारः (4) षट्

22. कौशुमी शाखा वर्तते

- (1) ऋग्वेदस्य (2) यजुर्वेदस्य (3) सामवेदस्य (4) अथर्ववेदस्य

23. सामवेदस्य प्रवर्तक ऋषिः वर्तते ?

- (1) पैलः (2) सुमन्तुः (3) जैमिनिः (4) भारद्वाजः

24. सुब्रह्मण्यावाहनं क्रियते।

- (1) ऋचा (2) यजुषा (3) साम्ना (4) अथर्वणा

25. सामधेन्मनुवाचनं क्रियते।

- (1) होत्रा (2) उद्गात्रा (3) अध्वर्युना (4) ब्रह्मणा

26. सोमयागस्य श्रौत नाम विद्यते

- (1) अग्निष्टोमः (2) ज्योतिष्टोमः (3) अत्यग्निष्टोमः (4) वाजपेयः

27. ज्योतिष्टोमे ज्योतीषि भवन्ति।

- (1) पञ्च (2) अष्ट (3) दश (4) चत्वारि

28. यज्ञं व्याख्यास्यामः स त्रिभिर्वेदैः इतिवाक्यमस्ति।

- |                           |                           |
|---------------------------|---------------------------|
| (1) कात्यायनश्रौतसूत्रस्य | (2) आपस्तम्बश्रौतसूत्रस्य |
| (3) बौधायनश्रौतसूत्रस्य   | (4) जैमिनीयश्रौतसूत्रस्य  |

29. त्रिवृत्पञ्चदशः सप्तदश एकविंश एतानि वाव तानि ज्योतीणि य एतस्य स्तोमाः इति वाक्यमस्ति।

- |                        |                           |
|------------------------|---------------------------|
| (1) शतपथब्राह्मणस्य    | (2) जैमिनिब्राह्मणस्य     |
| (3) षड्विंशब्राह्मणस्य | (4) तैत्तिरीय ब्राह्मणस्य |

30. अग्निष्टोमयज्ञस्य प्रारम्भो भवति

- |                      |                        |                 |                   |
|----------------------|------------------------|-----------------|-------------------|
| (1) अग्निष्टोमसाम्ना | (2) यज्ञायज्ञीय साम्ना | (3) बृहत्साम्ना | (4) रथान्तरसाम्ना |
|----------------------|------------------------|-----------------|-------------------|

31. अग्निष्टोमयज्ञस्य समाप्तिः भवति

- |                  |                   |                 |               |
|------------------|-------------------|-----------------|---------------|
| (1) अग्निष्टोमेन | (2) यज्ञायज्ञीयेन | (3) बृहत्साम्ना | (4) रथान्तरेण |
|------------------|-------------------|-----------------|---------------|

32. उक्थ्ये सामस्तोत्राणि भवन्ति।

- |            |            |          |            |
|------------|------------|----------|------------|
| (1) द्वादश | (2) पञ्चदश | (3) षोडश | (4) सप्तदश |
|------------|------------|----------|------------|

33. येन साम्ना यज्ञः समाप्यते स भवति

- |            |           |             |           |
|------------|-----------|-------------|-----------|
| (1) स्तोमः | (2) ग्रहः | (3) उक्थ्यः | (4) यज्ञः |
|------------|-----------|-------------|-----------|

34. द्वादशाग्निष्येमस्य स्तोत्राणि इति वाक्यमस्ति।

- |                     |                        |                      |                       |
|---------------------|------------------------|----------------------|-----------------------|
| (1) शतपथब्राह्मणस्य | (2) ताण्ड्यब्राह्मणस्य | (3) ऐतरेयब्राह्मणस्य | (4) जैमिनिब्राह्मणस्य |
|---------------------|------------------------|----------------------|-----------------------|

35. षोडशीयागे शस्त्राणि भवन्ति

- (1) षोडश (2) द्वादश (3) सप्तदश (4) एकविंशः

36. अग्निष्टोमस्तोत्रानन्तरमुक्यमकृत्वा यत्रषोडशी क्रियते तस्य नाम अस्ति।

- (1) षोडशी (2) अत्मग्निष्टोमः (3) वाजपेयः (4) उक्थ्यः

37. तिरस्त्रोवृतः त्रिरुपावयवा यस्य स्तोत्रस्य स त्रिवृत् इतिवाक्यमस्ति।

- (1) वाजसनेयसंहितायाः (2) तैत्तिरीय ब्राह्मणस्य  
(3) शतपथब्राह्मणस्य (4) ऐतरेयब्राह्मणस्य

38. चतुर्णामृत्विग्णानामुपयोगो भवति

- (1) चातुर्मास्ये (2) सोमयागे (3) पशुबन्धे (4) दर्शपौर्णमासयोः

39. एतद्गणत्रयेणानुष्ठीयमानं कर्म अवेक्षितुं भवति

- (1) होता (2) उद्गाता (3) अध्वर्युः (4) ब्रह्मा

40. तत्र याजुर्वेदिकः भवति

- (1) होतृगणः (2) अध्वर्युगणः (3) उद्गातृगणः (4) ब्रह्मगणः

41. षोडशशस्त्राणि भवन्ति

- (1) अग्निष्टोमे (2) अत्यग्निष्टोमे (3) षोडश्याम् (4) उक्थ्ये

42. सामवेदिको भवति

- (1) होतृगणः (2) उद्गातृगणः (3) अध्वर्युगणः (4) ब्रह्मगणः



43. अध्वर्युर्यावतीर्गाः प्राप्नोति, ततोऽर्द्धं प्राप्नोति  
 (1) प्रतिप्तस्थाता (2) नेष्टा (3) उन्नता (4) अच्छावाक्
44. सामवेदे “यज्ञायज्ञो वो आनये” इत्यृचि गेयत्वेनविहितं साम उच्यते  
 (1) अग्निष्टोमः (2) उक्थ्यः (3) अतिरात्रः (4) वाजपेयः
45. सोमयागस्य समाप्तिः येन साम्ना तन्नाम्ना व्यवहारो भवति  
 (1) यागः (2) सप्तसंस्था (3) ऋत्विजः (4) द्रव्यम्
46. अग्निष्टोमस्तोत्रानन्तरमुक्थ्यमकृत्वा यत्र षोडशी क्रियते स भवति  
 (1) उक्थ्यम् (2) अत्यग्निष्टोमः (3) अतिरात्रम् (4) षोडशी
47. ज्योतिष्टोमस्याग्निष्टोमसंस्थाके स्तोत्राणि भवन्ति  
 (1) अष्ट (2) दश (3) द्वादश (4) षोडश
48. द्वादशस्तोत्राणि भवन्ति  
 (1) अग्निष्टोमे (2) उक्थ्ये (3) अतिराने (4) आप्तोर्या
49. ब्राह्मणानि भवन्ति  
 (1) कर्मस्वरूपावबोधकानि (2) यजुषः प्रधानभूतानि  
 (3) गानस्वरूपावबोधकानि (4) हविषः स्वरूपावबोधकानि
50. विधिभागानां विभागाः सन्ति  
 (1) चत्वारः (2) पञ्च (3) षट् (4) दश

51. वायुर्वैश्वेपिष्ठा देवता इत्यस्त्युदाहरणम्  
(1) विधिभागस्य (2) अर्थवादस्य (3) कर्मभागस्य (4) नामभागस्य
52. तच्चोदके मन्त्राख्या इति लक्षणमस्ति।  
(1) ब्राह्मणस्य (2) अर्थवादस्य (3) मन्त्रस्य (4) विधिभागस्य
53. अनुष्ठान स्मारकाः भवन्ति  
(1) विधयः (2) ब्राह्मणानि (3) मन्त्राः (4) अर्थवादाः
54. युवासुवासा इत्यादि मन्त्रः वर्तते  
(1) करणमन्त्रः (2) क्रियमाणानुवादीमन्त्रः  
(3) अनुमन्त्रणमन्त्रः (4) जपमन्त्रः
55. स्तुतमनुशंसति इत्यनेन सिद्धिर्भवति।  
(1) स्तोत्रम् (2) शस्त्रम् (3) हौत्रम् (4) ग्रहम्।
56. चतुर्भिः ऋत्विग्भिः सम्पद्यमानः यज्ञो भवति  
(1) अग्निहोत्रम् (2) दर्शपौर्णमासेष्टिः (3) पशुबन्धः (4) चातुर्मास्यम्
57. चातुर्मासस्य पर्वाणि भवन्ति  
(1) चत्वारिः (2) पञ्च (3) षट् (4) सप्त
58. यज्ञान्ते भवति  
(1) पुर्णाहुतिः (2) अवभृथः (3) उदवसानीयेष्टिः (4) अनुबन्ध्या

59. अम्बु अवदानहोमो भवति  
 (1) दीक्षणीयेष्ट्याम् (2) अवभृथे (3) तनूनपाते (4) याज्यायाम्
60. पाल्नीवतग्रहस्य प्रचारं करोति  
 (1) होता (2) उद्गाता (3) अध्वर्युः (4) प्रतिप्रस्थाता
61. अग्निष्टोमस्यारम्भो भवति  
 (1) यज्ञायज्ञियसाम्ना (2) बृहत्साम्ना (3) रथन्तरसाम्ना (4) सेतुसाम्ना
62. सोमस्थाने न्यग्रोधवृक्षस्याङ्कुरं द्रव्यं भवति  
 (1) ब्राह्मणकर्तुके (2) क्षत्रियवैश्यकर्तुके (3) शूद्रकर्तुके (4) अवकीर्णिकर्तुके
63. तानूनप्त्रं कर्मणः फलं भवति  
 (1) परस्परैर्ष्यादोषादिनिवारणम् (2) शत्रूविनाशः  
 (3) रोगविनाशः (4) दारिद्र्यविनाशः
64. यस्मिन् दिने सोमोऽभिषूयते तद्दिनं भवति।  
 (1) सोमक्रयदिनम् (2) सुत्यादिनम् (3) दीक्षादिनम् (4) ग्रहदिनम्
65. आहवनीयोद्धरणकाले श्येतसामगानं क्रियते  
 (1) उद्गात्रा (2) अध्वर्युणा (3) ब्राह्मणा (4) होत्रा
66. आहवनीयोद्धरण काले श्येत सामन्तः गानानन्तरं गीयते।  
 (1) बृहत्साम (2) यज्ञायज्ञीयसाम (3) वारवन्तीयसाम (4) रथन्तरसाम

67. आहवनीयाद्धरणकाले तत्पश्चात् गीयते

- (1) बृहत्साम (2) यज्ञायज्ञीयसाम (3) वारवन्तीयसाम (4) रथन्तरसाम

68. "विष्टुति शब्दस्मार्थो भवति।

- (1) स्तुतिविशेषः (2) काष्ठविशेषः  
(3) पलाशशाखायाः प्रादेशमितकाष्ठविशेषः (4) यज्ञेषु प्रयुज्यमानः काष्ठविशेषः

69. विष्टुतेः प्रयोगो भवति

- (1) शस्त्रशंसनकाले (2) स्तोत्रगानकाले (3) ग्रहग्रहणकाले (4) होत्रकर्मकाले।

70. अयं वाव यजुः योऽयं पवते। एष हि यन्नेवेदं सर्वं जनयति इति वाक्यमस्ति

- (1) शतपथब्राह्मणस्य (2) गोपथब्राह्मणस्य (3) ऐतरेयब्राह्मणस्य (4) ताण्ड्य ब्राह्मणस्य

71. अन्नोर्कप्राणामितरेवरपरिग्रहो भवति

- (1) यज्ञः (2) उक्थ्यः (3) स्तोमः (4) ग्रहः

72. येन साम्ना यज्ञः समाप्यते तद्भवति

- (1) स्तोमः (2) ग्रहः (3) उक्थ्यः (4) यज्ञः

73. 'सर्वं तेजः सामरूप्यम्' इति लक्षणमस्ति

- (1) ऋचाम् (2) साम्नाम् (3) यजुषाम् (4) अथर्वणाम्

74. यदेतत्तस्मिन् अर्चिदीप्यते तन्महाव्रतम् इति लक्षणमस्ति

- (1) ऋचाम् (2) यजुषाम् (3) साम्नाम् (4) अथर्वणाम्

75. गायत्रं त्वा गायति शक्वरीषु इति कर्म उपदिश्यते  
 (1) ब्रह्मणः (2) अध्वर्योः (3) होतुः (4) उद्गातुः
76. सामवेदस्य स्थानमस्ति।  
 (1) पृथिवी (2) अन्तरिक्षम् (3) द्युलोकः (4) परमेष्ठीमण्डलम्
77. सामवेदस्य देवता अस्ति  
 (1) अग्निः (2) वायुः (3) आदित्यः (4) सोमः
78. सूर्यो हवा अग्निहोत्रम् इतिवाक्यमस्ति  
 (1) शतपथब्राह्मणस्य (2) गोपथब्राह्मणस्य (3) ऐतरेयब्राह्मणस्य (4) षड्विंशब्राह्मणस्य
79. हिंकारेण साम्नः प्रयोगो भवति  
 (1) अग्निहोत्रे (2) दर्शपौर्णमासयोः (3) चातुर्मास्ये (4) पशुबन्धे
80. वसन्ति अग्नि कणाः यस्मिन्निति भवति  
 (1) वसन्तः (2) ग्रीष्मः (3) वर्षा (4) शरद्
81. पृथिवी स्वरसं सूर्यलोके प्रेषयति  
 (1) बृहत्साम्ना (2) रथन्तरसाम्ना (3) वैराजसाम्ना (4) स्वरसाम्ना
82. जातपुत्रः कृष्णकेशः अधिकारी भवति  
 (1) अग्न्याधानस्य (2) सोमस्य (3) दर्शपौर्णमासयोः (4) पशुबन्धस्य

83. ऋगध्यूहस्य मध्यमा भक्तिर्भवति

- (1) उद्गीथः (2) उक्थ्यः (3) निधनम् (4) भक्तिः

84. अन्योन्यमविनाभूते भवतः

- (1) ऋक्सामे (2) दृषदुपले (3) अग्निसोमौ (4) वायुश्चेन्द्रश्च

85. ऋचमनुसाम गीयते

- (1) रुद्रयज्ञे (2) चण्डीयज्ञे (3) सोमयज्ञे (4) दर्शपूर्णमासयोः

86. इयं पृथिवी ऋक् तत्राध्यूहोऽयमग्निः साम इति लक्षमस्ति

- (1) अन्योन्यसाम्नः (2) साम्नः (3) उद्गीथस्य (4) निधनस्य

87. यावतीयमृक् तावदेवेदं भवति

- (1) ऋक् (2) यजुः (3) साम (4) अथर्व

88. ऋगायतनापेक्षया वितायमानत्वात् बृहदायतनं भवति

- (1) ऋक् (2) यजुः (3) साम (4) अथर्व

89. तिसृभिः ऋग्भिः समं भवति

- (1) ऋक् (2) यजुः (3) साम (4) अथर्व

90. विष्कम्भस्य हि ऋकृत्वं पृष्ठस्य च साम इति वचनमस्ति-

- (1) निरुक्तस्य (2) नैदानस्य (3) ब्राह्मणस्य (4) सूत्रस्य

91. देवानामन्नं माम इतिवचनमस्ति  
 (1) शतपथस्य (2) ताण्ड्यस्य (3) जैमिनेः (4) अथर्वणः
92. ऋक्सामानि वा एष्टयः इति वचनमस्ति  
 (1) शतपथब्राह्मणस्य (2) ताण्ड्यब्राह्मणस्य  
 (3) जैमिनिब्राह्मणस्य (4) ऐतरेयब्राह्मणस्य
93. 'गायत्रं चक्षुः बृहद्रथन्तरे पक्षौ' इतिवाक्यमस्ति  
 (1) ऋचाम् (2) यजुषाम् (3) साम्नाम् (4) अथर्वणाम्
94. साम्नः विभक्तयः भवन्ति।  
 (1) चतस्रः (2) पञ्च (3) षट् (4) दश
95. सन्तानारम्भणं वितानोपक्रमणं वा भवति  
 (1) हिंकारः (2) प्रस्तावः (3) उद्गोथः (4) प्रतीहारः
96. निरुद्धसाम्नः संख्याभवति  
 (1) दश (2) द्वादश (3) चतुर्दश (4) षोडश
97. देवरथो वा रथन्तरम् इति वचनमस्ति  
 (1) शतपथस्य (2) ताण्ड्यस्य (3) षड्विंशस्य (4) जैमिनेः
98. यस्ते गोषु महिमा तद्भवति  
 (1) बृहत्साम (2) रथन्तरसाम (3) वैराजसाम (4) यज्ञायज्ञियसाम

15P/273/30

99. पशवो वै बृहद्रथन्तरे इतिवचनमस्ति

- (1) षड्विंशस्य (2) ताण्ड्यस्य (3) जैमिनेः (4) ऐतरेयस्य

100. ऋतुषु ओतप्रोतं भवति

- (1) शक्वरसाम (2) रैवतसाम (3) वैराजसाम (4) रथन्तरसाम

101. आदित्ये ओतप्रोतं भवति

- (1) शक्वरसाम (2) वैराजसाम (3) रैवतसाम (4) बृहत्साम

102. पशुसाम भवति

- (1) बृहत् (2) वामदेवः (3) रथन्तर (4) वैराजः

103. अनिधनं साम भवति

- (1) वामदेव (2) वैराज (3) ओक (4) राजनम्

104. प्राणमयं भवति

- (1) गायत्रम् (2) बृहत् (3) वैरुपम् (4) रथन्तरम्

105. प्राणवाग्चक्षुर्मनःसुः ओतप्रोतं भवति

- (1) परोवरीयसाम (2) राजनसाम (3) ओकसाम (4) बृहत्साम

106. धर्मस्य स्वरूपं भवति

- (1) नित्यम् (2) अनित्यम् (3) नित्यानित्यम् (4) लौकिकम्



107. धर्मस्य लक्षणस्वरूपे वर्तते

- (1) पुराणेषु (2) रामायणेषु (3) वेदेषु (4) गाथासु

108. धर्मे प्रमाणानि भवन्ति

- (1) पञ्च (2) सप्त (3) अष्ट (4) दश

109. अज्ञातस्य ज्ञापकं वाक्यं भवति

- (1) विधिः (2) अर्थवादः (3) मन्त्रः (4) ब्राह्मणम्

110. यागदि उदाहरणमस्ति

- (1) लोकस्य (2) धर्मस्य (3) अर्थवादस्य (4) अपूर्वस्य

111. द्वादशलक्षणी इति शब्देन सम्बोध्यते

- (1) न्यायदर्शनम् (2) मीमांसादर्शनम् (3) सांख्ययोगदर्शनम् (4) वेदान्तदर्शनम्

112. रथन्तरसामः रूपाणि भवन्ति।

- (1) द्वे (2) त्रीणि (3) चत्वारि (4) पञ्च

113. बृहद्वैराज रैवतमिति त्रीणिरूपाणि भवति

- (1) रथन्तरस्य (2) बृहत्साम्नः (3) यज्ञायज्ञीयस्य (4) पशुसाम्नः

114. पशवो वै बृहद्रथन्तरमिति वाक्यमस्ति

- (1) शतपथस्य (2) ऐतरेयस्य (3) ताण्ड्यस्य (4) षड्विंशस्य

115. वसन्तग्रीष्मवर्षाशरद्धेमन्तेषु पञ्चतृत्तुषु ओतप्रोतं भवति  
(1) बृहत्साम (2) वैराजसाम (3) रथन्तरसाम (4) शक्वरीसाम
116. गायत्रं परोवरीयञ्चेति द्वे सामनी भवतः  
(1) प्राणमये (2) ज्ञानमये (3) परिज्ञानमये (4) बुद्धिमये
117. वारवन्तीयं श्रामन्तीयं यज्ञायज्ञीयञ्चेति सामानि भवन्ति  
(1) वैष्णवम् (2) प्राजापत्यम् (3) ऐन्द्रम् (4) शाक्तम्
118. यस्मिन् साम्नि सर्वाव्यङ्गानि एकरूपाणि भवति तत् भवति  
(1) यज्ञायज्ञीयम् (2) बृहत् (3) सौरभम् (4) रथन्तरम्
119. प्रजापतेः यद्वैश्वरूप्यं तत् साम भवति  
(1) सर्वसाम (2) बेराजसाम (3) नौधससाम (4) वारवन्तीयम्
120. अग्निष्टोत्रे निरुहानि सामान्युत्थन्ते  
(1) अवमम् (2) परमम् (3) उच्चतमम् (4) मध्यमम्
121. इलान्दं यज्ञायज्ञीयं वारवन्तीयञ्चेति उच्यन्ते  
(1) महोक्थम् (2) महाव्रतम् (3) महाग्रहम् (4) अतिग्रहम्
122. अशीत्यक्षरस्य छन्दसः संज्ञा भवति  
(1) सिन्धुः (2) महाहृदः (3) आकाशः (4) महानदी

123. चित्याग्निमामानि भवन्ति

- (1) चत्वारि (2) पञ्च (3) षट् (4) सप्त

124. सत्रस्य ऋद्धिरसि इति साम्नः नाम भवति

- (1) अध्वर्युसाम (2) होतृसाम (3) आग्नीध्रसाम (4) प्रजापतिसाम

125. श्लोकानुश्लोकौ भवति

- (1) हविर्धानसामनी (2) सदोसामनी (3) आग्नीध्रसामनी (4) उत्तरसामनी

126. यामेति साम भवति

- (1) आग्नीध्रसाम (2) मार्जालीयसाम (3) सदोसाम (4) होतृसाम

127. आयुर्नवस्तमौ भवतः

- (1) आग्नीध्रसामनी (2) सदसः सामनी (3) हविर्धानसामनी (4) होतृसामनी

128. गौरीवितं सुज्ञानञ्च द्वे सामनी भवतः

- (1) आग्नीध्रसामनी (2) सदसः सामनी (3) वाचः सामनी (4) मार्जालीयसामनी

129. वेदस्य वेदतायाः कारणमस्ति

- (1) लौकिकविषयस्य साधनात् (2) अलौकिकविषयस्य साधनात्  
(3) देवविषयस्य साधनात् (4) गन्धर्वविषयस्य साधनात्

130. चातुर्वर्णस्य वर्णनमस्ति

- (1) नासदीयसूक्ते (2) अघमर्षणसूक्ते (3) पुरुषसूक्ते (4) पुष्पसूक्ते

131. तद्देवानां देवत्वं यद्विभूत्वा लोकानसृजत इतिवाक्यमस्ति

- (1) ऐतरेयस्य (2) जैमिनिः (3) शतपथस्य (4) कौशातिकब्राह्मणस्य

132. द्रव्यं देवतात्यागः याग इतियज्ञलक्षणमस्ति

- (1) कात्यायनस्य (2) आपस्तम्भस्य (3) गोभिलस्य (4) ऐतरेयस्य

133. धर्मस्यमूलं विद्यते

- (1) पुराणम् (2) तन्त्रम् (3) वेदाः (4) आगमः

134. अपौरुषेयशब्दस्याभिप्रायोऽस्ति

- (1) पुरुषभिन्नम् (2) स्त्रीणां सम्मतम् (3) दिव्यविषयः (4) असुरविषयः

135. वेदानामपौरुषेयत्वस्याभिप्रायोविद्यते

- (1) शब्दाः (2) जगतः मूलतत्त्वम् (3) यज्ञाः (4) पुरुषार्थचतुष्टयम्

136. दोषापनयनम्, गुणाधानम्, अतिशयाधानञ्चेति उद्देश्यानि सन्ति

- (1) यज्ञस्य (2) कर्मणाम् (3) संस्काराणाम् (4) देवतानाम्

137. सर्वाणि नामानि आख्यातजातानि इतिमतमस्ति

- (1) शौनकस्य (2) पारिणेः (3) यास्कस्य (4) पतञ्जलेः

138. देवताः भवन्ति

- (1) द्विविधाः (2) तिस्रः (3) चतस्रः (4) पञ्च

139. अङ्गकर्मणो फलप्राप्तिर्भवति

- |                          |                             |
|--------------------------|-----------------------------|
| (1) द्रव्याणां सहयोगेन   | (2) देवतानां सहयोगेन        |
| (3) प्रधानकर्मणो सहयोगेन | (4) इतिकर्तव्यतायाः संयोगेन |

140. वेदतत्त्वं नित्यं सार्वकालिकमिति मतमस्ति

- |                    |                   |                 |                  |
|--------------------|-------------------|-----------------|------------------|
| (1) पाश्चात्यानाम् | (2) पौरस्त्यानाम् | (3) भारतीयानाम् | (4) वैदेशिकानाम् |
|--------------------|-------------------|-----------------|------------------|

141. वेदाः भिन्नेषु कालेषु निबद्धा इति भवमस्ति

- |                    |                   |                 |                  |
|--------------------|-------------------|-----------------|------------------|
| (1) पाश्चात्यानाम् | (2) पौरस्त्यानाम् | (3) भारतीयानाम् | (4) वैदेशिकानाम् |
|--------------------|-------------------|-----------------|------------------|

142. तिलकमहोदयानां सम्मतौ वेदानामाविर्भावकालेऽस्ति

- |                      |                      |                      |                    |
|----------------------|----------------------|----------------------|--------------------|
| (1) द्विसहस्रवर्षाणि | (2) चतुःसहस्रवर्षाणि | (3) अष्टसहस्रवर्षाणि | (4) दशसहस्रवर्षाणि |
|----------------------|----------------------|----------------------|--------------------|

143. सर्वप्रथमं वेदसंहितायाः प्रकाशनमभवत्

- |               |                |                    |               |
|---------------|----------------|--------------------|---------------|
| (1) भारतवर्षे | (2) जर्मनीदेशे | (3) इङ्ग्लैण्डदेशे | (4) जापानदेशे |
|---------------|----------------|--------------------|---------------|

144. कल्पयन्ति नानाविधधर्मान् इति

- |          |            |               |                   |
|----------|------------|---------------|-------------------|
| (1) कर्म | (2) कल्पम् | (3) शास्त्रम् | (4) धर्मशास्त्रम् |
|----------|------------|---------------|-------------------|

145. श्रौतयज्ञेन यजमानस्य संस्कृत्यते

- |           |         |             |            |
|-----------|---------|-------------|------------|
| (1) आत्मा | (2) मनः | (3) बुद्धिः | (4) शरीरम् |
|-----------|---------|-------------|------------|

146. स्मार्तयज्ञेन यजमानस्य संस्कृत्यते

- |            |              |            |                |
|------------|--------------|------------|----------------|
| (1) पुरुषः | (2) प्रकृतिः | (3) शरीरम् | (4) इन्द्रियम् |
|------------|--------------|------------|----------------|

15P/273/30

147. यज्ञेन यजमानः प्राप्नोति

- (1) स्वर्गम् (2) राज्यम् (3) धनम् (4) पुत्रम्

148. स्तोत्रेण यजमानस्यात्मा गच्छति

- (1) स्वर्गम् (2) इन्द्रलोकम् (3) शिवलोकम् (4) विष्णुलोकम्

149. शस्त्रेण क्रियते आत्मनः

- (1) बृहत्यां स्थापनम् (2) गायत्र्यां स्थापनम् (3) त्रैष्टुभे स्थापनम् (4) जगत्यां स्थापनम्

150. ग्रहेण आत्मनः क्रियते

- (1) आत्मनः बन्धनम् (2) आत्मनः संस्कारः  
(3) आत्मनः मोक्षः (4) नवीनात्मानः स्वर्गे स्थिरीकरणम्

**ROUGH WORK**  
रफ़ कार्य

## अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर केवल नीली-काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में सभी पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में लिफाफा रहित प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त, लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा उत्तर-पत्र नहीं दिया जावेगा। केवल उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जावेगा।
4. अपना अनुक्रमांक तथा उत्तर-पत्र का क्रमांक प्रथम आवरण-पृष्ठ पर पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।
6. ओ० एम० आर० पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।
7. उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा वह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जावेगा।
8. प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के वैकल्पिक उत्तर के लिए आपको उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जावेगा।
10. ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा के उपरान्त केवल ओ एम आर उत्तर-पत्र परीक्षा भवन में जमा कर दें।
13. परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।